શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

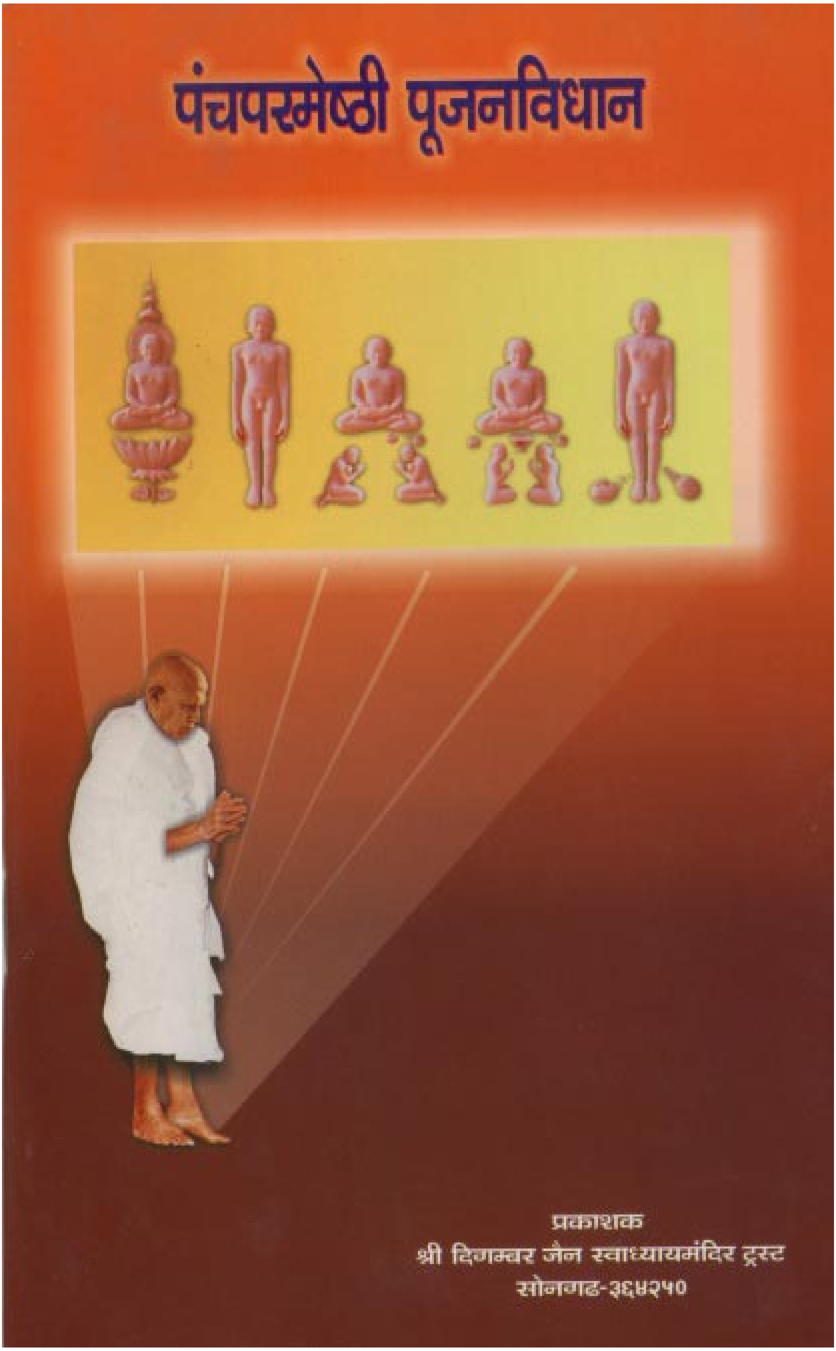

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

भगवानश्रीकुन्दकुन्द-कहानजैनशास्त्रमाला, पुष्प–१३२

ॐ

कविवर श्री टेकचंदजी कृत

श्री
पंचपरमेष्ठी पूजनविधान

प्रकाशक

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट

सोनगढ-३६४२५०

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

प्रथम संस्करण : २१००	वि. सं. २०३१	ई. स. १९७५
द्वितीय संस्करण : २०००	वि. सं. २०६२	ई. स. २००६

मूल्य : रू. 10=00

मुद्रक :

कहान मुद्रणालय

जैन विद्यार्थी गृह कम्पाउण्ड,

सोनगढ-३६४२५०

: (02846) 244081

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

પરમ પૂજ્ય અધ્યાત્મમૂર્તિ સદ્ગુરુદેવ શ્રી કાનજીસ્વામી

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

प्रकाशकीय निवेदन

परमोपकारी स्वानुभूति विभूषित, अध्यात्मयुगस्रष्टा पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामीकी कल्याणवर्षिणी अनुभवरसभीनी वाणीसे मुमुक्षु समाजको तीर्थंकर भगवन्तों द्वारा प्रकाशित मोक्षमार्गके मूलरूप भवांतकारी सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रका यथार्थ बोध प्राप्त हुआ है। उनके द्वारा ही इस युगमें निज ज्ञायक स्वभावके आश्रयसे ही स्वानुभूतियुक्त सम्यग्दर्शन–निश्चय सम्यग्दर्शनकी प्राप्तिका मार्ग उजागर हुआ है।

तदुपरांत पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा ही इस सम्यग्दर्शनकी प्राप्तिके उत्कृष्ट निमित्त सच्चे देव-गुरु-शास्त्रका भी यथार्थ ज्ञान मुमुक्षु समाजको प्राप्त होनेसे उनके प्रति आदर-भक्ति-बहुमानके भाव जागृत हुए है।

साथ साथ प्रशममूर्ति भगवती माता पूज्य बहिनश्रीने भी पूज्य गुरुदेवश्रीकी भवनाशिनी वाणीका हार्द मुमुक्षु समाजको बताकर मुमुक्षुओंके अंतरमें जागृत सच्चे देव-शास्त्र-गुरुके प्रतिके भक्तिभावको भक्ति-पूजाकी अनेकविध रोचक गतिविधियोंके द्वारा नवपल्लवित किया है।

जिसके फलस्वरूप सुवर्णपुरीमें देव-शास्त्र-गुरुकी भक्ति पूजनके विविध कार्यक्रमोंका आयोजन सदैव चलता रहता है। इस हेतुको ध्यानमें रखकर ट्रस्टकी ओरसे पूजन, विधानके विविध पुस्तकोंका प्रकाशन हो रहा है।

इसी शृंखलाके अंतर्गत श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, सोनगढकी ओरसे कविवर टेकचंदजी कृत पंचपरमेष्ठी-पूजन विधान पुस्तकका यह संस्करण पुनः प्रकाशित किया जाता है। आशा है कि इस प्रकाशनसे मुमुक्षु समाज अवश्य लाभान्वित होगा।

पूज्य बहिनश्रीकी ९३वीं
जन्मजयंती महोत्सव
भादों वदी–२
वि. सं. २०६२

साहित्यप्रकाशन–समिति
श्री दि. जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट
सोनगढ ३६४२५०

पंचपरमेष्ठी-पूजनविधानका मंडल

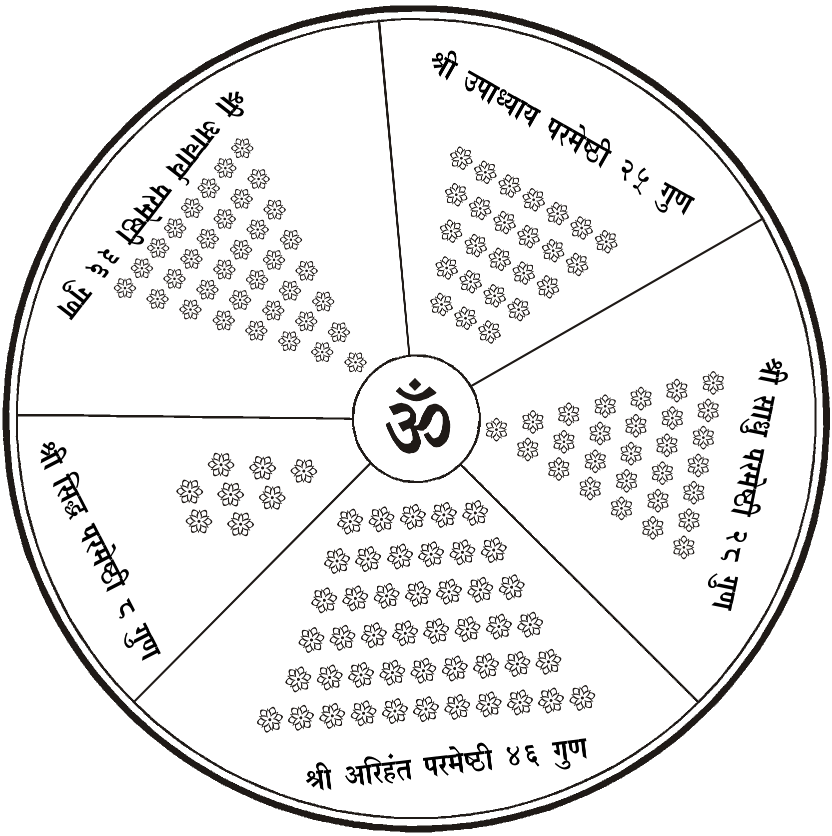

मध्यमें स्वस्तिक अथवा ॐ कार लिखे। तदनंतर उसको घिरे हुए पांच कोठे हैं, उनमें प्रथम कोठेमें श्री अरिहंतके ४६ गुणोंकी, दूसरे कोठेमें श्री सिद्ध परमेष्ठीके ८ गुणोंकी, तीसरेमें श्री आचार्य परमेष्ठीके ३६ गुणोंकी, चौथेमें श्री उपाध्याय परमेष्ठीके २५ गुणोंकी एवं पाँचवें कोठेमें श्री साधु परमेष्ठीके २८ गुणोंकी स्थापना की जाती है। उन प्रत्येकका पूजन इस विधानमें है।

नमः सिद्धेभ्यः

कविवर टेकचंदजी कृत

श्री पंचपरमेष्ठी पूजन विधान भाषा

(दोहा)

मनरंजन भंजनकरम, पंच-परमगुरु-सार।
पूजत हैं सूर-नर-खगा, पावत हैं भवपार ।।१।।

(सोरठा)

प्रथम देव अरिहंत, गर्भ आदि षट मासके।
मनिमय नगर करंत, पीछे जिन अवतार ले।।२।।

(चौपाई)

पर परजाय छांडि जिनराय। गरभ विषै अवतार धराय।
तब षोडस सुपना मा लेय। तिनकी कथा सुनो पुनि जेय ।।३।।

(अडिल्ल छंद)

ऐरावत गज वृषभ सुफेद सुजानिये,
सिंघ पहुपकी माल लक्ष्मि हित दानिये।
पूरन ससि रवि कुंभ दोय सुभ देखिया,
मच्छ-जुगल जल-थान केलि जुत पेखिया ।।४।।

(पद्धरी छंद)

सरवर कमलन करि पूर्न जोय,
जलरासि समुद्र फिर लख्यो सोय।

सिंहासन सुरग-विमान जान,
धरणेंदर देख्यो जान मान ।।५।।

(गीता छंद)

रतन-रासि निहार अगनी धूम बिन जोई सही ।
ये सुपन लखि मा हरष पायौ फेरि जिन जनमे सही ।।
विधि तरन पुन तप ठानि अघ हरि ज्ञान केवल पाय है ।
तब होय अतिसय नाम सुनि अब जनम ते इस थाय है ।।६।।

(छन्द वेसरी)

तब होय दस जिन लहै सु ज्ञानो,
चौदह अतिसय सुरकृत मानो ।
आठ प्रतिहारज सुभ होवै,
अनंत चतुष्टै सब मल खोवै ।।७।।

(चाल छन्द)

ये छ्यालिस गुन जुत देवा, विचरै संग द्वादस भेवा ।
छबि देखि समोसर्न केरी, हरि-सुर पूजैं करि फेरि ।।८।।

(चाल जोगीरासेकी)

फेरि सिद्ध गुन आठ जु पाये, आठ करम ही जारै ।
होय निरंजन चेतनमूरति लोकसिखर थिति थारै ।।
आचारज गुन धार छतीसों सुनि तिन कथा सोहाई ।
दसधा धर्म तप द्वादस गाये पंच अचार सुभाई ।।९।।

(जिनजयकी चाल)

गुपति तीन षट आवसी सब मिलि होय छतीसा जी ।
बहुश्रुत गुनपचीस हैं अंग पूरब सब पूरा जी ।।
बहुश्रुत पूजों भावसों ।।

बीस आठ गुन साधके तहां पंच महाव्रत सारो जी।
पंच सुमति पंच अखिं दमै षट आवसि भेद सु धारो जी॥
ते गुरु अति सुखकार है॥१०॥

(कड़खा छन्द)

भूमि सोवैं सदा मंजन ते ना करैं,
त्याग वस्त्र तनों सीस लुंचै।
खाय इक बार थिति सुभग छानैं सदा,
दंतधोवन तजैं साध मानैं॥११॥

(चाल-सुनभाईरे की)

येही पंचगुरु पूजिये सुनि भाईरे तो चाहै भवपार।
चेत मन भाईरे।
येही भवदधि नाव हैं सुनि भाईरे को पुन्नतें यह पाय।
चेत मन भाईरे॥१२॥

(कड़खा छन्द)

येही परमेष्ठी जो पाँच जगपूज्य हैं,
मोह सो सुभट इन हेरि मार्‍यौ।
शेष कर्म सात तब परे कस गिनति मैं,
मारि कै भवनमैं काज सार्‍यौ॥
आप भव तिर गये और काढन भये,
धारि करुणा जगत जीव केरी।
दीनको तार संसार-हर देव हैं,
मेटि हैं भगतकी जगत फेरी॥१३॥

इति भक्ति स्तुति समाप्त।

अथ समुच्चय पूजा

(स्थापना; चाल–पंच मंगलकी)

पंच परमगुरु सब सुखदाई, पूजो भविजन हरष बढ़ाई।
तिनके पद सुर हरि नित्य सेबैं, पूरव अघ-वन कों धो दैवैं ।।
दैवें जु वहनी सकल बनकूं, और कहो कहा गाइये।
ताके सुफल भव छांडि भवि, जन मुकति रमणी पाइये ।।

ॐ ह्रीं परमब्रह्माण: पंचपरमेष्ठीजिनसमूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् ! आह्वानम् ।

ॐ ह्रीं परमब्रह्माण: पंचपरमेष्ठीजिनसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ! स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं परमब्रह्माण: पंचपरमेष्ठीजिनसमूह !! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अथाष्टक

(चाल–जोगीरासेकी)

झारी कनक सुघाट मनोहर निर्मल नीर भराई।
जिन सिद्ध आचारज अरु बहुश्रुति साधु जजों हरषाई ।।१।।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व० ।

चंदन बावन निर्मल पानी घसिकर लेकर आई।
जिन सिद्ध आचारज अरु बहुश्रुति साधु जजों हरषाई ।।२।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व० ।

अक्षत नख सिख सुगंध सुभ नैननको सुख दाई।
जिन सिद्ध आचारज अरु बहुश्रुति साधु जजों हरषाई ।।३।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व० ।

सुरद्रुम पहुप सुगंध मनोहर, मोहत भृंग-चित भाई।
जिन सिद्ध आचारज अरु बहुश्रुति साधु जजों हरषाई ।।४।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व० ।

षट् रस जुत नैवेद्य पवित्तर, क्षुधा नासन लाई।
जिन सिद्ध आचारज अरु बहुश्रुति साधु जजों हरषाई ॥५॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व० ।

रतन दीप धरि थाल आरती हरषित चित ले भाई।
जिन सिद्ध आचारज अरु बहुश्रुति साधु जजों हरषाई ॥६॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व० ।

दसधा धूप मिलाय अगिन मधि खेऊं अति उमगाई।
जिन सिद्ध आचारज अरु बहुश्रुति साधु जजों हरषाई ॥७॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व० ।

श्रीफल लौंग सुपारी खारक सुर-सिव-फलदा भाई।
जिन सिद्ध आचारज अरु बहुश्रुति साधु जजों हरषाई ॥८॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्व० ।

जल चंदन अक्षत पुह चरु ले दीप धूप फल दाई।
जिन सिद्ध आचारज अरु बहुश्रुति साधु जजों हरषाई ॥९॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्योऽनर्घपदप्राप्तायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(अडिल्ल छंद)

अरहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु जी,
येही पंच भव तार भव्य अघ मादजी।
पूजत सुर नर खगा मुक्ति-फल कारनै,
तातें मैं भी जजों पाप हट टारने ॥१०॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अर्हंतादिपंचपरमेष्ठिभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा

अरिहंत पूजा

(हरिगीत)

प्रभु तरन तारन कमल ऊपर, अंतरीक्ष विराजिया,
यह वीतराग दशा प्रतच्छ विलोकि भविजन सुख लिया।
मुनि आदि द्वादश सभाके भवि जीव मस्तक नायकै,
बहु भान्ति बारंबार पूजें, नमैं गुणगण गायकै॥

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणसहित-अर्हत्परमेष्ठी! अत्रावतरावतर संवौषट्! आ०
ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणसहित-अर्हत्परमेष्ठी! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः! स्था०
ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणसहित-अर्हत्परमेष्ठी! अत्र मम सन्निहितो भव भव! सं०

अरिहन्तके ४६ गुणके पृथक्, पृथक् अर्घ

जन्मके दश अतिशय

(चौपाई)

जनमत दस अतिसय जिन लेय, पूजै सुर न हर्ष धरेय।
नाहि पसेव होय तन मांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि॥१॥

ॐ ह्रीं पसेवरहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामिति स्वाहा।

मल नहि होय तास तन मांहि, निरमल देह होय सुख दांहि।
ये अतिसय जिन तनमैं पांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि॥२॥

ॐ ह्रीं मलरहितान्वितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सहस थान सम चतुर जु होय, और घाट कबहू नहि जोय।
ये अतिसय जिन जनमत पांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि॥३॥

ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थानान्वितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

संहनन वज्र वृषभ जो होय, अदभुत महिमा धारै सोय।
ये अतिसय जिन जनमत पांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि॥४॥

ॐ ह्रीं वज्रऋषभनाराचसंहननसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

होय सरीर सुगंध अपार, नासिक विषै लुबध करतार ।
ऐसी सोभा अन्य न पांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि ॥५॥

ॐ ह्रीं सुगंधितशरीरसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ऐसो रूप जिनेश्वर लहैं, कामदेव कोटिक छबि जहैं ।
ये अतिसय जनमत जो पांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि ॥६॥

ॐ ह्रीं महारूपातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

भले भले लक्षन सो जान, गुन अनेक तनी है खान ।
ये सुभ छबिसो जनमत पांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि ॥७॥

ॐ ह्रीं शुभलक्षणातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जनमत ही तिनके तन होय, श्रोनित स्वेत वरन अवलोय ।
ये अतिसय धारै तन मांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि ॥८॥

ॐ ह्रीं श्वेतवर्ण श्रोणितातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ऐसो वचन कहै मुख सोय, तिनको सुनि जन मोहित होय ।
मधुर मिष्ट वच अति सुख दाहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि ॥९॥

ॐ ह्रीं मधुरवचनातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ताके बल सम और न धाम, है बल अनंत जिनेश्वर ठाम ।
जनमत ही बल अतिसय पांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि ॥१०॥

ॐ ह्रीं अनंतबलातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

इति जनमके दस अतिशय समाप्त ।

केवलज्ञानके दश अतिशय

(अडिल्ल छंद)

समोसरण जुत जहाँ जिनेश्वर थिति करैं,
तहंतैं जोजन इक सत दुरभिख ना परै ।
ऐसो अतिसय केवल उपजे होय है,
ताके पद सुर नरा जजैं मद खोय है ॥१॥

ॐ ह्रीं शतयोजनदुर्भिक्षनिवारकजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तब जिन केवल लहैं गमन नभमें करैं,
देव असंख्या गैल भक्ति मुख उच्चरैं।
ऐसो अतिसय केवल उपजे होय है,
ताके पद सुर नरा जजैं मद खोय है ॥२॥

ॐ ह्रीं आकाशगमनातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिनवर जहाँ थिति करैं सदा हित दायजी,
तिस थानक नहिं कोय मारने पायजी।
ऐसो अतिसय केवल उपजे होय है,
ताके पद सुर नरा जजैं मद खोय है ॥३॥

ॐ ह्रीं अदयाभावातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

देव नरा पसु खगा और को दुठ तनी,
इनको उपसर्ग नाहिं बानि जिन इम भनी।
ऐसो अतिसय केवल उपजे होय है,
ताके पद सुर नरा जजैं मद खोय है ॥४॥

ॐ ह्रीं उपसर्गरहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षुधा अति दुःख करै जगत इस वसि पर्यो,
सो जिन कवल-अहार खान सब परिहर्यौ।
ऐसो अतिसय केवल उपजे होय है,
ताके पद सुर नरा जजैं मद खोय है ॥५॥

ॐ ह्रीं कवलाहाररहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

समोसरन तव देव जिनेश्वर थिति करैं,
जब मुख दीसैं चार भवनको सुख करैं।
ऐसो अतिसय केवल उपजे होय है,
ताके पद सुर नरा जजैं मद खोय है ॥६॥

ॐ ह्रीं चतुर्मुखविराजमानजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्राकृत संस्कृत देस सकल भाषा सही,
सब विद्या अधिपती सकल जानन मही।
ऐसो अतिसय केवल उपजे होय है,
ताके पद सुर नरा जजैं मद खोय है ।।७।।

ॐ ह्रीं सकलविद्याधिपत्ययुतजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पुद्गल तन आकार मूरती बन रह्यौ,
ताकी छाया नांहि होय अचरज भयौ।
ऐसो अतिसय केवल उपजे होय है,
ताके पद सुर नरा जजैं मद खोय है ।।८।।

ॐ ह्रीं छायारहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

नख कच तन जो होय बढ़न तिनको रह्यो,
है जैसे ही रहैं एक गुण यह लह्यौ।
ऐसो अतिसय केवल उपजे होय है,
ताके पद सुर नरा जजैं मद खोय है ।।९।।

ॐ ह्रीं नखकेशवृद्धिरहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

नेतर का टिमकार नाहि भौं कच हलैं,
नासागर दिठ सदा काल जिन ध्रुव तुलैं।
ऐसो अतिसय केवल उपजे होय है,
ताके पद सुर नरा जजैं मद खोय है ।।१०।।

ॐ ह्रीं नेत्रभ्रूचपलतारहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(सोरठा)

ये दस अतिसय सार, केवल उपजे जिन लहैं।
सो जिन है भवतार, सेवौ भवि वसु द्रव्यतें ।।११।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानस्यदशातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(इति केवलज्ञानके दश अतिशय समाप्त)

देवकृत चतुर्दश अतिशय

(सोरठा)

अर्ध मागधी वानि, सब जीवन सुख दाय है।
अतिसय जिन को मान, देव सदाई धुन कहै ॥१॥

ॐ ह्रीं अर्द्धमागधीभाषासहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जहाँ जिनकी थिति होय, सकल जीव मैत्री समा।
अतिसय जिनको जोय, देव निमित धुनि वरनयौ ॥२॥

ॐ ह्रीं सर्वजीवमैत्रीभावयुतजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

षट रितुके फल फूल, फलैं जहाँ जिन थिति करैं।
जिन अतिसय सुखमूल, देव निमित-मातर सही ॥३॥

ॐ ह्रीं षडर्तुफलपुष्पसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दर्पन-सी सब भूमि, होय जहाँ जिन विचरिहैं।
जिन अतिसय अघ होमि, देव निमित-मातर कहै ॥४॥

ॐ ह्रीं दर्पणसमभूम्यतिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

मंद सुगंधी पौन, होय सकलकूं हितकरा।
जिन अतिसय सुभ सौनि, मोक्षगमनको है सही ॥५॥

ॐ ह्रीं सुगन्धितपवनातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सर्व जीव आनन्द, होय जहाँ जिन विचरि हैं।
कटत पापके फंद, देव निमित-मातर सही ॥६॥

ॐ ह्रीं सर्वानन्दकारकजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

कंट रहित भू होय, अतिसय तो जिन देवको।
देव निमितको सोय, पूजों सिव सुर अवतरे ॥७॥

ॐ ह्रीं कंटकरहितातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

गंधोदक सुभ वृष्टि, देव करैं अति सुभ लहैं।
सुख पावत लखि सृष्टि, महिमा जिनवर देवकी ॥८॥

ॐ ह्रीं गंधोदकवृष्ट्यतिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिन पद पूजैं देव, कमल रचै हित कारने।
अदभुत महिमा लेव, भाषित जिन सब भवि करो ।।९।।

ॐ ह्रीं पदतलेकमलरचनायुतजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

निरमल होय अकास, सब जीवन सुख कारजी।
अतिसय जिन सुख रासि, देव करैं उर भक्ति तैं ।।१०।।

ॐ ह्रीं गगननिर्मलातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सब दिस निरमल होय, धूम खेह वरजित सुभग।
अतिसय जिनको जोय, देव करैं वसि भक्तिके ।।११।।

ॐ ह्रीं सर्वदिशानिर्मलातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

देव करैं जयकार, ताकरि नभ बहरो कियौ।
अतिसय जिनको सार, देव भक्ति वसि उच्चरैं ।।१२।।

ॐ ह्रीं जयजयशब्दातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

धर्मचक्र सुर लेय, अगवानी नित संचरै।
अतिसय जिनको जोय, देव करै वसि भक्तिके ।।१३।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

मंगल द्रव्य वसु जानि, देव लेय आगे चलैं।
अतिसय जिनको मान, देव सहायक भक्तिके ।।१४।।

ॐ ह्रीं वसुमंगलद्रव्यसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(वेसरी छंद)

पंखो चमर छत्र कुंभ भाई। झारी दर्पण पडघा थाई ।।
साथ्यो मिलि वसु मंगल थानो। ये चौदह देवों कृत मानों।

ॐ ह्रीं देवकृतचतुर्दशातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(इति देवकृत चतुर्दश अतिशय समाप्त ।)

अष्ट प्रातिहार्य

(भुजंगी छंद)

कहों प्रातिहार्य वसु हरष दाई,
तहां विरछि असोक नहीं सोक दाई ।
लखे तासको सोक हेरो न पावै,
ये महा गुन जिन बिना नाहिं आवै ॥१॥

ॐ ह्रीं अशोकवृक्षप्रातिहार्यसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

देव सुर-द्रुम के फूल ल्यावैं,
महा भक्ति वसि मेघ ज्यों ते चलावैं ।
मनो जोतिषी ज्यान नभसे सुध्यावैं,
ये महा गुन जिन बिना नांहि आवैं ॥२॥

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टिप्रातिहार्यसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दिव्य धुनि सकल जीवको सुहाई,
सुनैं पाप खय होय भला पुन्य दाई ।
नमैं देव खग और सबै पाप जावैं,
ये महा गुन जिन बिना नाहिं आवैं ॥३॥

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिप्रातिहार्यसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चमर गंध धारा जिमै सोभ दाई,
चलै देव कर वोपमा अधिक थाई ।
घने जीव मुखते प्रभू भक्ति गावैं,
ये महा गुन जिन बिना नाहिं आवैं ॥४॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिचामरवीज्यमानजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जग पूज्य सिंघपीठ भगवान केरौ,
नमै तास को नासि है जगत फैरौ ।
लगे कनक जुत रतन बहु सोभ द्यावैं,
ये महा गुन जिन बिना नाहिं आवैं ॥५॥

ॐ ह्रीं सिंहासनप्रातिहार्यसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

महा जोति जिनतन तनी चक्र थायौ,
प्रभामंडल ताने भलो नाम पायौ।
लखे तासको सात भौ दरसि आवैं,
ये महा गुन जिन बिना नाहिं आवैं ॥६॥

ॐ ह्रीं प्रभामंडलप्रातिहार्यसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

घनी जातिके देव बाजे बजावैं,
तिको दुंदुभी शब्द सुभ नाम पावैं।
भनै देव मुख वीनती हरष ल्यावैं,
ये महा गुन जिन बिना नाहिं आवैं ॥७॥

ॐ ह्रीं देवदुंदुभिप्रातिहार्यसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जड़े कनक नग छत्र मणि दंड धारै,
लगी माल मोतिनकी लिपटि सारै।
मनो तीन जग जीव को छाय आवै,
ये महा गुन जिन बिना नाहिं आवै ॥८॥

ॐ ह्रीं छत्रत्रयप्रातिहार्यविभूषितजिनेन्द्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(अडिल्ल छंद)

वृक्ष अशोक सिंहासन भामंडल चमर।
पुहुपवृष्टि दिव्यधुनि दुंदुभि छत्र वर ॥
ये वसु प्रातीहार्य जिनों के होय हैं।
इन बिन ये नहिं और देव के सोय हैं ॥९॥

ॐ ह्रीं वसुप्रातिहार्यविभूषितजिनेन्द्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(इति अष्ट प्रातिहार्य समाप्त)

अनंत चतुष्टय

(वेसरी छंद)

ज्ञान अनंतानंत जनावै,
तीन लोक त्रिय काल लखावै।

सर्वज्ञपनों तासतें होई,
ये गुन जिन बिना लहै न कोई ॥१॥

ॐ ह्रीं अनंतज्ञानसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

दरसन अनंत अनंत हि जोवैं,
सो सो भई होय फिर होवै।
याते भी सर्वज्ञ पद होई,
ये गुन जिन बिन लहै न कोई ॥२॥

ॐ ह्रीं अनंतदर्शनसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुख अनंत मोह-हरि होवै,
बाधा अनंत काल नहि जोवै।
सुख अनंत बिन देव न होई,
ये गुन जिन बिन लहै न कोई ॥३॥

ॐ ह्रीं अनंतसुखसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अंतराय भट जिन जय लीनो,
तिन भव-दुख-हरि कारज कीनो।
अनंत वीर्य प्रकाशन होई,
ये गुन जिन बिन लहै न कोई ॥४॥

ॐ ह्रीं अनंतवीर्यसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(अडिल्ल छन्द)

दस जनमत दस केवल उपजे होय है।
चौदह सुरकृत अनंत चतुष्टै सोय है॥
प्रातिहार्य वसु सब मिलि गुन छ्यालीस जी।
इन अतिसय जुत होय सोय जगदीशजी ॥५॥

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिशद्गुणसहितजिनेन्द्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(वेसरी छन्द)

जिन अतिसय छ्यालीस सुपावै,
ताकी कथा सकल मन भावै।
ते भवि चित दै सुनो बखानौ,
तातैं होय पाप मल हानौ ।।१।।

जनमत दस पसेव नहि होई,
सहसथान समचतुर सुजोई।
सँहनन वज्रवृषभनाराचै,
मल नहि तन सुगंध शुभ माचै ।।२।।

महा रूप शुभ लछन होहै,
स्वेत रुधिर वच मधुर सुसोहै।
बल अनंत जिन-तनमैं पावै,
जनमत तो ए दश गुन थावें ।।३।।

केवलज्ञान भये दस जानौ,
सत जोजन दुरभिच्छ न मानौ।
नभमैं गमन दया सब ल्यावै,
उपसर्ग नाहि देवकैं थावै ।।४।।

कवल अहार नहीं जिन केरो,
चव मुख दीखै छाँह न हेरो।
सब विद्याके ईश्वर होई,
नख अरु केस बढै नहि कोई ।।५।।

आँखिनकी भौं टिमकै नाही,
ये दस केवल उपजे थाही।

अब सुनि देव चतुरदस ठानै,
अर्द्धमागधी भाषा मानै ।।६।।

सकल जीवके मैत्रीभावो,
सब रितुके फल–फूल फलावों ।
दरपन समान भूमि तहाँ होई,
मंद सुगंध पवन शुभ जोई ।।७।।

सब जीवनको आनन्द होवै,
भूमि कंटिका रहित सु सोवै ।
गंधोदक की वरषा जानौ,
पद तल कमल रचत हित थानौ ।।८।।

निरमल गगन देव जय वानी,
दसो दिसा निरमल अधिकानी ।
धर्मचक्र वसु मंगल ठानौ,
ये चौदह देवा कृत मानौ ।।९।।

अब सुनि प्रातिहार्य वसु भाई,
वृक्ष अशोक पुहुप वृष्टि थाई ।
दिव्यधुनि चमर सिंहासन जानो,
भामंडल दुंदुभि सुख दानौ ।।१०।।

छत्र सहित वसु जानौ भाई,
फिरि सुचारि चतुष्टै थाई ।
दर्शन ज्ञान वीर्य सुख भेवा,
ये छ्यालीस गुण जुत है देवा ।।११।।

ये गुन जामै देव प्रसिद्धा,
इन विन और देव सब अंधा ।
याते देव परखि करि सेवो,
सुरग मुक्ति सुखको भवि लेवो ।।१२।।

(धत्ता)

जहां ये गुन होई, देव जु सोई,
मंगल कर्ता भव्यनको।
सो मोको तारो, वा जग प्यारो,
दे अपनी थुति सब जनको ॥१३॥

ॐ ह्रीं षट्‌चत्वारिशद्‌गुणसहितजिनेन्द्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(इति अरहंत देव पूजा समाप्त)

सिद्ध पूजा

(अडिल्ल छंद)

आठों कर्म निवारि धारि गुन आठ जू,
भये निरंजन छिनमैं सुखके ठाट जू।
बातवलै तन ठये लोकत्रिय-पति भये,
ते सिध नमो सुभाय ज्ञान मूरति ठये॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठी ! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वानम् ।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठी ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठी ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

(पद्धरि छंद)

ये ज्ञानावरनी पंच वीर,
जिन घात्यौ जिय गुन ज्ञान धीर।
सब वरनी घाति लयो सुज्ञान,
ते सिद्ध जजों त्रिय जग प्रधान॥१॥

ॐ ह्रीं पंचप्रकारज्ञानावरणीयकर्मविनाशक सिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

नव दरसन वरनी दरस छाय,
इन घाते ते भगवान थाय।
सो धरै अनंत दरसन सुथान,
ते सिद्ध जजों त्रिय जग प्रधान॥२॥

ॐ ह्रीं नवप्रकारदर्शनावरणीयकर्मविनाशकसिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्म एक वेदनी दोय भेव,
मोहिको सुख दुख देवैं स्वमेव।
हरि वेदनि होय अबाध थान,
ते सिद्ध जजों त्रिय जग प्रधान॥३॥

ॐ ह्रीं द्विप्रकारवेदनीयकर्मरहितसिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

मोह दो प्रकार वसि जगत जोर,
तिन जिय गुन सम्यक् जयो सोर।
तिस मोहको जीते जगत जान,
ते सिद्ध जजों त्रिय जग प्रधान॥४॥

ॐ ह्रीं द्विविधमोहकर्मविनाशकसिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्म आयु चार वसि जगत जेर,
खोडे पग ज्यौं परवसि पडेर।
तिन आयु घाति अवगाह ठान,
ते सिद्ध जजों त्रिय जग प्रधान॥५॥

ॐ ह्रीं चतुःप्रकारायुकर्मविनाशकसिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्म नाम चतेरा ज्यौं बखान,
इन घाति अमूरति भये सुजान।
गति-स्वांगधरन त्यागो महान,
ते सिद्ध जजों त्रिय जग प्रधान॥६॥

ॐ ह्रीं नामकर्मविनाशकसिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ये गोत्र कर्म दोय विधि सरूप,
ता वसि कबहूं फेर रंक भूप।
ये नासि अगुरुलघु गुन सुमान,
ते सिद्ध जजों त्रिय जग प्रधान ।।७।।

ॐ ह्रीं गोत्रकर्मविनाशकसिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

विधि अन्तराय कर्म पाँच भेव,
तिन जियको गुन घात्यो स्वमेव ।।
ताको हति केवल अनंत ठान,
ते सिद्ध जजों त्रिय जग प्रधान ।।८।।

ॐ ह्रीं पंचप्रकारांतरायकर्मविनाशकसिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(गीता छन्द)

ज्ञानदरशन आवरण वेदनी मोह जुतं हनी।
आयु नाम रु गोतकर्म अंतराय हरि कीनी मनी ।।
ये आठ कर्म हरि दाहि आतम आपको पद सुध कियौ।
ते भये तीनो लोक नायक नमो ध्रुव चाहो जियौ ।।९।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्मविनाशकसिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(चाल पंचमंगलकी)

तीन लोक त्रिय सत तेताली, घनाकार ताके मधि नाली।
चौदह राजू त्रस तहाँ होई, चारों गति रचना मधि सोई।
अधो भाग नर्क सात बताये, मध्यमें नर तिरयंच सुगाये ।।

गाये जु ऊपर देव थानक, उर्ध्वकों फिर सिधशिला।
ता ऊपरै सिद्धदेव राजै, पवन इकथलमें मिला।
ते कर्म काटि सुवाट जावै, ते सकल इस थल रहैं।
रहैं काल अनंत सुथिर ताहीं, फैरि भव-तन ना लहैं ।।१।।

एक एक शिव थानक माहीं, सिद्ध रहै हैं अनंता ठाहीं।
भिन भिन रहै मिलै नहि कोई, द्रव्य गुण परजै निज निज सोई।
सबही चेतन गुन बहु धारैं, सुखमय तिष्टत अघ अरि जारैं ॥

जारैं जु आठों कर्म भवदा आठ गुन परकाशये।
तिन ज्ञानमें त्रय लोक घट पट आनिकै सब भासये॥
ते नमो सब सिद्धचक्र उर धरि तास फल शिवथल लहों।
और थुति फल नांहि वांछा नांहि अन मुखते कहों ॥२॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इति सिद्धपूजा समाप्त ।

आचार्य पूजा

(दोहा)

गुन छतीस तिन ढिग रतन, भव वन संकट टार।
नमों चरन तिनके सही, तिन गुन जाचन सार ॥१॥

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणसहिताऽऽचार्य परमेष्ठी ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानम् ।
ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणसहिताऽऽचार्य परमेष्ठी ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणसहिताऽऽचार्य परमेष्ठी ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सं०

(चाल छन्द)

जे सबतें करुना आने, सो उत्तम क्षमाको जाने।
ते आचारज सुखदाई, सो पूजों अर्घ चढाई ॥१॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो मान रंच नहिं लावैं, सो मार्दव गुनको पावैं।
ते आचारज सुखदाई, सो पूजों अर्घ चढाई ॥२॥

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जाके उर माया नाहीं, सो आरज भाव कहाहीं।
ते आचारज सुखदाई, सो पूजों अर्घ चढाई ॥३॥

ॐ ह्रीं उत्तमआर्जवधर्मसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तन जावो तो भले जाई, ते झूठ न कहहिं कदाई।
ते आचारज सुखदाई, सो पूजों अर्घ चढाई ॥४॥

ॐ ह्रीं सत्यधर्मसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जाके उर वांछा नाहीं, सो निरमल शौच कहाहीं।
ते आचारज सुखदाई, सो पूजों अर्घ चढाई ॥५॥

ॐ ह्रीं शौचधर्मसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

इन्द्री वसि प्रानको राखै, सो संजम दो विधि भाखै।
ते आचारज सुखदाई, सो पूजों अर्घ चढाई ॥६॥

ॐ ह्रीं द्विविधसंयमधर्मसहिताऽऽचार्य परमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो द्वादश विधि तप ल्यावै, परनति नहि खेद लगावै।
ते आचारज सुखदाई, सो पूजों अर्घ चढाई ॥७॥

ॐ ह्रीं द्वादशतपसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पर द्रव्य नहीं अपनावै, सो त्याग धर्म चित भावै।
ते आचारज सुखदाई, सो पूजों अर्घ चढाई ॥८॥

ॐ ह्रीं त्यागधर्मसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो अंतर बाहिर नागा, सो आकिंचन भय भागा।
ते आचारज सुखदाई, सो पूजों अर्घ चढाई ॥९॥

ॐ ह्रीं आकिंचनधर्मसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

निज पर तियको शुभ त्यागी, सो ब्रह्मचर्य अनुरागी।
ते आचारज सुखदाई, सो पूजों अर्घ चढाई ॥१०॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यधर्मसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(कड़खा छन्द)

एक दोय चार षट अष्ट दिन पख लगौ,
खान पानी तनो त्याग ल्यावैं।
मास द्वै एक षट चार बरसी भलौ,
धीर तजि असन उरसा सो ध्यावैं ॥
इनहि आदिक तिको बास दुद्धर करै,
नाहि परनति विषै खेद आनै।
जीयके धीर व्रत धार आचार्य हैं,
नमों तिन चरन फल पाप भानै ॥११॥

ॐ ह्रीं अनशनतपसहिताऽऽचार्य परमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

भूखते अर्द्ध खावैं तथा भाग त्रिय,
भाग चौथा भखै व्रतधारी।
एक द्वै ग्रास लै भाव समता धरै,
तास ते जाय अघ सूर हारी ॥
नाम ऊनोदरी वृत्त याको कह्यौ,
तासके धार गुरु जगत जानै।
जीयके धीर व्रत धार आचार्य हैं,
नमों तिन चरन फल पाप भानै ॥१२॥

ॐ ह्रीं ऊनोदरव्रतसहिताऽऽचार्य परमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

धरै जो वृत्त तामैं महा दृढ रहै,
रोजकी तास परमान ल्यावै।
तासकू याद रखि सकल कारज करै,
नेम परमान ता विधि निभावैं।

खान अरु पान गमनादि सब राखिले,
नाम संखयाव्रति सूर आनै ।
जीयके धीर व्रत धार आचार्य हैं,
नमों तिन चरन फल पाप भानै ॥१३॥

ॐ ह्रीं वृत्तिपरिसंख्यानतपधारकाऽऽचार्य परमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

रोज षट् रस विषै रसनको त्यागि है,
सब रसा नाहि इक बार खावे ।
मोहबल विषै विनराग चित्त राखि है,
नाहि रसना वसी आप आवे ॥
भोग अछ-रसन तजि आप भोगी भयौ,
रैन दिन ध्यान धेमाहि आनै ।
जीयके धीर व्रत धार आचार्य हैं,
नमों तिन चरन फल पाप भानै ॥१४॥

ॐ ह्रीं रसपरित्यागव्रतधारकाऽऽचार्य परमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जाहि आसन थकी धीर तहँ थिति करै,
तास विधि लौ नहीं ठाम छोरै ।
काल जेते तनो नेम धारै बुधा,
बार तेति वपू प्रीति तोरैं ॥
देव खग नर पशु कृत जो दुःख मिलै,
तोहु ते धीर नहीं दुःख मानैं ।
जीयके धीर व्रत धार आचार्य हैं,
नमों तिन चरन फल पाप भानै ॥१५॥

ॐ ह्रीं विविक्तशय्यासनसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तन विषै खेदको निमित्त जो विधि मिलै,
सोहि विधि ठानि समभाव ल्यावे ।
त्याग तनको किये वृत ऐसो बनै,
मोह वसि जीव इह नाहिं पावैं ॥

वीतरागी बिना व्रतको शिर धरै,
राग जुत जीव तो हारि भानै ।
जीयके धीर व्रत धार आचार्य हैं,
नमों तिन चरन फल पाप भानै ॥१६॥

ॐ ह्रीं कायक्लेशतपसहिताऽऽचार्य परमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

बोल परमाद वसि दोष परनति विषै,
तथा चल-हलतको पाप लागै ।
तासको छेद कारन लहै दंड मुनी,
धीरता देखि अघ नाहि जागै ॥
आपही आपको दंड लेते मुनि,
तथा गुरु पास लै सरल जानैं ।
जीयके धीर व्रत धार आचार्य हैं,
नमों तिन चरन फल पाप भानै ॥१७॥

ॐ ह्रीं प्रायश्चित्ततपसहिताऽऽचार्य परमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

आपते गुनी तिनको बिनै जे करै,
ते महाव्रतको ओप ल्यावैं ।
बिगर नमनी किये हानि सब गुननकी,
तासते देखि बुधि मान ढावैं ॥
सकल संजम तनी बाहि दिढ है यहै,
जतनतें ते गुनी याही आनै ।
जीयके धीर व्रत धार आचार्य हैं,
नमों तिन चरन फल पाप भानै ॥१८॥

ॐ ह्रीं विनयतपसहिताऽऽचार्य परमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

आप ते महंत गुनधार हैं जे जती,
तथा श्रुत देव महा सुखदाई ।
तिनहि बंदगी रूप परनति जानिये,
सो वईयावृत बानि गाई ॥

वृत ऐसो बनै मोक्षमारग लहै,
होय मन्द मोह यह रीति ठानै।
जीयके धीर व्रत धार आचार्य हैं,
नमों तिन चरन फल पाप भानै ॥१९॥

ॐ ह्रीं वैयावृततपसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

रैन दिन वानि जिन पाठ मुखतैं करै,
तथा उपदेश दे हरष लाई।
उर विषै वानि जिन सदा चिन्तवन करै,
रहे जिन आनिमें भक्ति भाई ॥
करै गुरु पास परसन विनै ठानि कै,
इह विधि पांच स्वाध्याय आनै।
जीयके धीर व्रत धार आचार्य हैं,
नमों तिन चरन फल पाप भानै ॥२०॥

ॐ ह्रीं स्वाध्यायतपसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

त्याग तनको करै वृत ऐसो धरैं,
सूर उपसर्ग ते नाहिं भागै।
लिखे कर्मके टाट दुःख सुख सहै जगतमें,
छांडि परमोह निज मांहि जागै ॥
राग तन मांहि सो दिढ तपा नाहि व्युत-
सर्ग तप धारि तन प्रीति हानै।
जीयके धीर व्रत धार आचार्य हैं,
नमों तिन चरन फल पाप भानै ॥२१॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गतपसहिताऽऽचार्य परमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

मन वचन काय त्रिय जोग इक ठाम करि,
आप सुध ध्याय परभाव त्यागै।
तथा देव अरहंत परमेष्ठि सिद्धके,
गुन तनी माल सुभ भाव लागै ॥

रोक चित मृग शुभ ध्यान-जाली विषै,
एक थल राखि सिव ठाहि आनै।
जीयके धीर व्रत धार आचार्य हैं,
नमों तिन चरन फल पाप भानै ॥२२॥

ॐ ह्रीं ध्यानतपसहिताऽऽचार्य परमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

कहे तप अंतर बाहिर करी द्वादश,
धीर तन त्याग बिनराग ध्यावे।
जीव रागी विषै चाह ताकी रहै,
सो नहीं इन दसी भाव ल्यावै।
यहै जानि रागी विना रागकी पारिखा,
ठानि तप धारि ते धीर आनै।
जीयके धीर व्रत धार आचार्य हैं,
नमों तिन चरन फल पाप भानै ॥२३॥

ॐ ह्रीं द्वादशतपसहिताऽऽचार्य परमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

षट् आवश्यकके अर्घ

(पद्धरी छन्द)

जे षट् आवसि धारै सदीव,
ते शुद्ध सरूपी होय जीव।
गुन धारि जारि कर्म आठ वीर,
निज तिरैं और तारक सुधीर ॥२४॥

ॐ ह्रीं षटावश्यकसहिताऽऽचार्य परमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सब जीव तरस थावर सुजान,
समभाव सकल पै चित्त ठानि।
तजि आरति रुद्र सुभाव सोय,
समता उर सो सामाय होय ॥२५॥

ॐ ह्रीं सामायिकावश्यकसहिताऽऽचार्य परमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अरहंत सिद्ध आदिक महंत,
तिनकी थुति नित मुनिवर करंत।
उर निरमल करि शुद्ध भाव ठान,
ता फल पावै सिद्ध लोक थान ॥२६॥

ॐ ह्रीं स्तवनावश्यकसहिताऽऽचार्य परमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ते शुद्ध भाव कारन महान,
वंदन विधि करि है देव थान।
तातैं अघ रज धोवै सुवीर,
ता फल पावैं भव समुद्र तीर ॥२७॥

ॐ ह्रीं वंदनावश्यकसहिताऽऽचार्य परमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

मुनिके मन वच तन दोष लाय,
सो दूरि करै प्रतिक्रमन भाय।
उर आलोचन करि शुद्ध होय,
ते सूर नमो मद टारि जोय ॥२८॥

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणावश्यकसहिताऽऽचार्य परमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

मन वच तन अघ विधि त्याग होय,
लखि आवसि प्रत्याख्यान सोय।
ये करै रोज आचार्य जान,
ता फल चिंतैं अघ होय हान ॥२९॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावश्यकसहिताऽऽचार्य परमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तन त्याग होय थिर थान सोय,
कायोत्सर्ग आवसि कर्म होय।
ये करै रोज आचार्य मान,
ताबलि चिंते अघ होय हान ॥३०॥

ॐ ह्रीं कायोत्सर्गावश्यकसहिताऽऽचार्य परमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचाचारके अर्घ

(सोरठा)

शुद्धपदारथ भाव, जानै गुन परजै सकल।
ताकरि होय शिवराव, ज्ञानाचार सो जानिये ॥३१॥

ॐ ह्रीं ज्ञानाचारसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सकल पदारथ सोय, देखै शुद्ध करि सरदहैं।
तातैं शिवसुख होय, सो दर्शनआचार है ॥३२॥

ॐ ह्रीं दर्शनाचारसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

छांडै सकल कषाय, गुपति सुमति वृत आदरै।
वरतै नगन सुभाय, सो चारित्राचार है ॥३३॥

ॐ ह्रीं चारित्राचारसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर्म हरनके काज, वीरज फौरे आपनो।
तप संजम बहु साज, सो वीरजआचार है ॥३४॥

ॐ ह्रीं वीर्याचारसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वादश विधि तप ठानि, समता भावन परनवै।
सो करि है कर्म हानि, तपाचार सो जानिये ॥३५॥

ॐ ह्रीं तपाचारसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठीभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीन गुप्तियोंके अर्घ

(गीता छन्द)

मन चपल है करि कौन ऐसो कपि तने पदकूं लहै।
ताकी विकलता लहर दधि ज्यों जगत-जिय वसि ना रहै ॥
ते धन्य गुरु वसि कियौ याकूं आप या वसि ना रहै।
मन गुपति याकूं जानि भवि जन या फलै शिव सुर ठहै ॥३६॥

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

वचन निज वसि राखि भाषत जिन तनी बानी कहै।
परमाद वच कबहू न भाखै ता थकी जिय अघ लहै।।
इह वचनगुपति सदीव आचारज जिको पावै सही।
मन वचन तन वसु द्रव्य ले करि पद जजों इनके सही।।३७।।

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो काय अपने हाथ राखै चपलता मेटै सही।
परमाद टारि सुधारि थिरता जारि अघ ले शुभ मही।।
लखि कायगुपति सुनाम याकों सदा आचारज करै।
ते धीर या फल जारि सब कर्म मुक्ति सो रमनी वरै।।३८।।

ॐ ह्रीं कायगुप्तिसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

धर्म दस विधि बरत बारह गुपति तीन बखानिये।
आचार पाँचौ महासुन्दर आवसि षट शुभ मानिये।।
इह गुन छत्तीसो धरें सोही सूर आचारज कहै।
तिन चरन कमल सुद्रव्य वसु लै जजों मन वच तन वहै।।३९।।

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

आचारज गुन आरती कहूं हिये थुति आनि।
ताकूं नमि पुनि फल लहै होय पापकी हानि।।१।।

(पद्धरी छंद)

उत्तम छिमा क्रोध भट मार्‍यौ।
मार्दव मान जिसौ अरि टार्‍यौ।
आर्जव माथा कुटनी टारी।
सत्पथकी सब झूट निवारी।।२।।

शौच सकल उरको शुचि कीनौ।
संजमतैं अवृत जय लीनौ।
तप तपि सकल पाप निरवारै।
त्याग भाव परतैं परवारै ॥३॥

आकिंचन परिग्रह परिहारै।
ब्रह्मचर्य तिय भाव निवारै॥
येही धर्म दसों सुखदाई।
अब मुनि द्वादश तप मन लाई ॥४॥

अनशन वास तनी विधि सोहि।
अवमोदर्य खान तुछ होही॥
वृतिपरिसंख्या नित व्रत ठानै।
रसपरित्यागी रस नहि जानै ॥५॥

विविक्त सय्या थल दिढ होहै।
कायकलेश कष्ट विधि जोहै।
ये तो बाह्य तने षट जानो।
अब षट अंतर तप सुनि कानो ॥६॥

प्राछित लगै दोष कूं टारै।
बिनै बड़ोंकी नमन सु धारै।
वैयावृत गुरुको सुख ठानै।
सो स्वाध्याय बानि मुख आनै ॥७॥

व्युतसर्ग काय त्याग विधि होई।
ध्यान धर्म मन चिंतै सोई॥
अब सुनि षट आवसिकी बातैं।
तातैं होय महा सुभदा तैं ॥८॥

सामायिक सबतें समभावा।
स्तवन जिन-सिधकौ थुति चावा॥

वंदन सो जिनकौ शिर नावै ।
प्रतिकर्मनतैं पाप मिटावै ॥९॥

प्रत्याख्यान त्याग सो जानो ।
कायोतसर्ग तनत्याग बखानो ॥

अब सुनि पंच अचार सुभाई ।
तिन बल बहु जीवन शिव पाई ॥१०॥

ज्ञानाचार ज्ञान विधि ठानै ।
दरसन सो दरसन विधि आनै ॥

चारित चारु चरित विधि लावै ।
तपाचार तप रीति करावै ॥११॥

वीर्याचार पुरुषारथ जानौ ।
अब सुनि तीनो गुपति बखानौ ॥

मन वच तन वसि राखै सोई ।
गुपति नाम जानै भवि होई ॥१२॥

(दोहा)

इन छत्तिस गुन सहित जो, नमो सूर मन लाय ।
ताके गुन पावन निमित, भव भव होय सहाय ॥१३॥

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्यो महार्घं निर्व० स्वाहा ।

(इति आचार्य पूजा समाप्त)

उपाध्यायजीकी पूजा

(दोहा)

अंग पूर्व धारक मुनि नमो तास पद जान।
ता फल अघ मिटि सुभ बनै लहै शुद्ध शिव थान॥

ॐ ह्रीं उपाध्यायपरमेष्ठिन् ! अत्रावतरावतर संवौषट् इति आह्वानम् ।

ॐ ह्रीं उपाध्यायपरमेष्ठिन् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं उपाध्यायपरमेष्ठिन् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्नि०

(सोरठा)

चौदह पूरब सार, एकादस अंग जुत सही।
ये पच्चीस गुन धार, होय उपाध्या सो नमों॥१॥

ॐ ह्रीं पञ्चविंशतिगुणसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ग्यारह अंगके अर्घ

(मरहठा छन्द)

आचारंग मैं इम वरनायौ सुनो भविक चित आनि।
काज सकल ही करौ जतनतें महा शुद्ध उर जानि॥
या अँग रहस सकल ही पावे उपाध्याय है सोय।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी भवि पूजो मन वच जोय॥२॥

ॐ ह्रीं आचारांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सूत्र क्रतांग दूसरो अंग है तामैं इम व्याख्यान।
धर्म तनी किरिया सब यामें भाखी है भगवान॥
या अँग रहस सकल ही पावै उपाध्याय है सोय।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी भवि पूजो मन वच जोय॥३॥

ॐ ह्रीं सूत्रकृतांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जानो तीजो अंग सथाना तामधि जीवके थान बताय।
येक दोय आदिक उगनीसों चौसठ षट जिय ठाम सुपाय॥

या अँग रहस सकल ही पावै उपाध्याय है सोय।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी भवि पूजो मन वच जोय ।।४।।

ॐ ह्रीं स्थानांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

है समवाया अंग चतुर्था यामधि वस्तु सकल सम गाय।
धर्म अधर्म द्रव्य सम भाखे जगत जीव सम सम सिध भाय ।।
या अँग रहस सकल ही पावै उपाध्याय है सोय।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी भवि पूजो मन वच जोय ।।५।।

ॐ ह्रीं समवायांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अंग वाख्यापरज्ञप्ति पंचमो तिसमें ऐसो कथन चलाय।
अस्ती जीव नास्ती जानो येक अनेक सुवस्तु सुभाय ।।
या अँग रहस सकल ही पावै उपाध्याय है सोय।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी भवि पूजो मन वच जोय ।।६।।

ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञस्यंगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

षष्टम ज्ञात्रि कथा अंग जानौ तामहि सकल कथा व्याख्यान।
चक्री कामदेव तीर्थंकर इन आदिक पहुँचे शुभ थान ।।
या अँग रहस सकल ही पावै उपाध्याय है सोय।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी भवि पूजो मन वच जोय ।।७।।

ॐ ह्रीं ज्ञातृधर्मकथांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जानि उपासिक अंग सप्तमो तामधि श्रावक कथन कहाय।
एकादस पडिमा आदिक बहु किरिया तनै समूह बताय ।।
या अँग रहस सकल ही पावै उपाध्याय है सोय।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी भवि पूजो मन वच जोय ।।८।।

ॐ ह्रीं उपासकाध्ययनांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अंतकृतांग दशांग महा अंग अष्टम यामधि इम लिखिवाय।
इक इक जिन वारै अंतहकृत दस दस केवल कथन चलाय ।।

या अँग रहस सकल ही पावै उपाध्याय है सोय।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी भवि पूजो मन वच जोय ।।९।।

ॐ ह्रीं अंतःकृद्दशांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अनुत्तरो उपपाद दसांग अंग तिस महि इक इक जिनकी बार।
दस दस मुनि अति सह्यौ उपद्रव गये अनुत्तर इम लखि सार ।।
या अँग रहस सकल ही पावै उपाध्याय है सोय।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी भवि पूजो मन वच जोय ।।१०।।

ॐ ह्रीं अनुत्तरोपपादिकदशांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

परसन-व्याकर्ण अंग विषै इम गई वस्तु इत्यादि बताय।
जीवन मरन सुखदुखकी विधि सब परसन के भेद चलाय ।।
या अँग रहस सकल ही पावै उपाध्याय है सोय।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी भवि पूजो मन वच जोय ।।११।।

ॐ ह्रीं प्रश्नव्याकरणांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सूत्र विपाक अंग एकादस तामहि कर्म विपाक बखानि।
तीवर मंद भावतें बाँधे सो रसदे इत्यादि सु जानि।
या अँग रहस सकल ही पावै उपाध्याय है सोय।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी भवि पूजो मन वच जोय ।।१२।।

ॐ ह्रीं विपाकसूत्रांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(इति एकादस अंग समाप्त)

चौदह पूर्वके अर्घ

(अडिल्ल छंद)

अब चौदह पूरबकी कथा सुहावनी।
तिन इह पाई रिद्धि जिनै अघ रज हनी ।।
इनके धारी उपाध्याय जग गुरु कहै।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी जजि अघ दहै ।।१३।।

ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा

(गीता छन्द)

पूर्व है उतपाद परथम कथन तामैं इम सही।
वस्तुके उतपाद वय ध्रुव आदि महिमा अति लही॥
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतैं पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये॥१४॥

ॐ ह्रीं उत्पादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूर्व अग्रायन सु दूजो कथन नय दुरनय करै।
तत्त्व द्रव्य पदार्थ के परमान जानै उर धरै।
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतैं पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये॥१५॥

ॐ ह्रीं अग्रायणीपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूर्व वीर्य प्रवाद तीजो कथन वीरजको चलै।
आत्म वीर्य सुकाल खेतर ज्ञान चारित पर मिलै॥
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतैं पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये॥१६॥

ॐ ह्रीं वीर्यानुपवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अस्ति नास्ति सुपूर्व चौथो सप्तभंग बखानिये।
द्रव्य तत्त्व पदार्थके सब अस्ति वय विधि जानिये॥
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतैं पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये॥१७॥

ॐ ह्रीं अस्तिनास्तिपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूर्व ज्ञानप्रवाद पंचम ज्ञान वसु लक्षन कहे।
सब ज्ञान फल परमान इनको आदि सहु विधितैं लहै॥
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतैं पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये॥१८॥

ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूर्व सत्यप्रवाद षष्टम गुपत बेद बखानिये।
सति असत्य अनेक वैन सुभेद तातें जानिये॥
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतैं पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये॥१९॥

ॐ ह्रीं सत्यप्रवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मप्रवाद सुपूर्व सप्तम जीव लक्षन तँह कह्यौ।
जीय आयो जीवगो इन आदि इस पूरब ठह्यौ॥
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतैं पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये॥२०॥

ॐ ह्रीं आत्मप्रवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व कर्मप्रवाद तामधि कर्म की सब विधि कही।
लखि सत्ता बंध उदै सु परकति आदि इनको फल सही॥
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतैं पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये॥२१॥

ॐ ह्रीं कर्मप्रवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व प्रत्याख्यान नवमो वस्तु इत्यादिक कही।
अरु द्रव्य क्षेत्र सुकाल संवर वास मत्यादिक सही॥
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतैं पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये॥२२॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व है विद्यानुवाद सु अष्ट निमित्त बखानिये।
विद्यासाधन रूप फल बल आदि रीति सुमानिये॥
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतैं पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये॥२३॥

ॐ ह्रीं विद्यानुप्रवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व है कल्याणवाद सु तहाँ इस विधि वरनयो।
कल्याण पांचो जिन तने जोतिष गमनको फल चयौ॥
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतैं पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये॥२४॥

ॐ ह्रीं कल्याणवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूर्व प्राणावाद माही मंत्र तंत्र सुविधि कही।
फिरि वैद्य जोतिष भूत नासनकी सकल विधि है सही॥
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतैं पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये॥२५॥

ॐ ह्रीं प्राणावादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूर्वं क्रियाविसालके मधि गीत नृत्य छंद विधि कही।
शास्त्र नय लंकार चौसठ कला तियकी तहाँ सही॥
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतैं पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये॥२६॥

ॐ ह्रीं क्रियाविशालपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूर्व चर्म त्रिलोकबिंदु सुकथन तहँ इम वरनयौ।
उर्द्ध मध्य अधोलोकको सब दुख सुखा थल जिम चयौ॥
इन पूर्वके अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये।
वसु द्रव्यतैं पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये॥२७॥

ॐ ह्रीं लोकबिंदुपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(पद्धरी छंद)

अंग एकदश अदभुत सुज्ञान, फिर पूर्व चौदह और जान।
इनके गुन वेत्ता ते महंत, जिन उपाध्याय पूजों सुसंत॥

ॐ ह्रीं एकादशांगचतुर्दशपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्व० स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

वीस पांच गुन धार गुरु, उपाध्याय हित दाय।
तिन वंदे थुतिके किये, महा पुन्य उपजाय ॥१॥

(वेसरी छंद)

आचारांग भनै सुखदाई, सूत्र कृतांग रहस सब पाई ॥
थाना अंग सथान बताये, समवाया अंगके गुन थाये ॥२॥

व्याख्या प्रज्ञप्ति अंगको जानै।
ज्ञातृकथाको भेद बखानै ॥
अंग उपासिक धेनु सुधायौ।
अंग कृतांग दसांग सुझायौ ॥३॥

अनुत्तर पाद दसांग सुजानौं।
अंग प्रश्नव्याकर्ण बतानौ ॥
सूत्र विपाक अंग हितकारी।
तिनकी रहसि लई गुरु सारी ॥४॥

यह एकादश अंग तिन पाये।
उपाध्याय सो सब मन भाये ॥
अब पूरब चौदह सुन भाई।
प्रथम पूर्व उतपाद कहाई ॥५॥

अग्रायन पूरबकूं धारै।
वीर्यप्रवाद पूर्व अघ जारै ॥
अस्ति-नास्ति-परवाद सुजानौ।
ज्ञानप्रवाद पंचमो मानों ॥६॥

सत्यप्रवाद पूर्वकों पावै।
आत्मप्रवाद पूर्व समझावै ॥

कर्मप्रवाद पूर्व सुखकारो ।
प्रत्याख्यान पूर्व को धारो ॥७॥
पूर्व विद्यानुवादको जानै ।
पूर्व कल्याणवाद अघ हानै ॥
प्राणावाद पूरव हरि पायौ ।
पूर्व क्रियाबिसाल उर जायौ ॥८॥
अंतिम लोक बिंदु है भाई ।
ये चौदह पूरव सुखदाई ॥
इनके धार उपाध्या होवै ।
तिनके जजै सिवा सुर जोवै ॥९॥

(सोरठा)

इह पूरव अंग धार, तिन जग पूजित पद लयौ ।
सो करि है अघ छार, तिन पूजे जिनपद लहैं ॥

ॐ ह्रीं पंचविंशतिगुणसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(इति उपाध्यायजीकी पूजा समाप्त)

❁

साधु महाराजकी पूजा

(दोहा)

बीस आठ गुन साधु कै, नमों तास कर जोर।
ताके वंदे पाप सब, जाय सकल ढिग छोर ।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिमूलगुणसहितसाधुपरमेष्ठिन् ! अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानम् ।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिमूलगुणसहितसाधुपरमेष्ठिन् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिमूलगुणसहितसाधुपरमेष्ठिन् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

(चौपाई)

अष्टाविंसति गुण जुत होय।
साध जिको जगके गुरु जोय।
आतम रंग राचे मुनिनाथ।
पाऊँ इन पद भव भव साथ ।।१।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिमूलगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(गीता छंद)

तिरस थावर जीव सबही आप सम जानै सही।
मन वचन तन जियको न दुःखदा सकल पै समता लही ।।
जो दुष्ट को निज काय पीडै तौ न कबहूँ दुःख करै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै ।।२।।

ॐ ह्रीं अहिंसामहाव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

तन जाय तौ नहि असत भाषत कहै सत वच सार जू।
चवै सम्यक् बैन सोहू सूत्र के अनुसार जू ।।
तिस वचनको सुनि सकल प्राणी पाप मति अपनी हरै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै ।।३।।

ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

बिन दिये परको माल कबहूं मन वचन छूवै नहीं।
तन आपने हू तें सुविरकति दिये ते भोजन लही॥
काय नगन फिरै उदंड सो जाचना बुधि ना करै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै॥४॥

ॐ ह्रीं अचौर्यमहाव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

नारि देव मनुष्य पशुकी मन वचन तन करि तजै।
सो सीलधर होय बाल सम निरदोष अपनो पद सजै॥
ते जगत तिय तजि मुक्तिनारी वरन को उद्यम करै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै॥५॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यमहाव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जे तजै द्वै विधि परिग्रहकूं बाह्यभ्यंतर जानिये।
तिल मात्र पुद्गल बंध सेती ममत की विधि भानिये॥
जे रहे विमुख सुभाव तनतें सोहि समता उर धरै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै॥६॥

ॐ ह्रीं परिग्रहत्यागमहाव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

चारि कर भू सोधते पद धरैं सुभ चित लायकै।
जो बनै कारन जोर इत उत तो लखै नहिं भायकै॥
त्रस जीव थावर सकल सेती भाव समता उर धरै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै॥७॥

ॐ ह्रीं ईर्यासमितिसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो बोलि हैं बच सकल हितदा खेदको जिय ना लहै।
जिनवैनभाषित समा भाषत पोरि समता जुत रहै॥
तिन वचनको सुनि भव्य प्रानी आपने अघकूं हरै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै॥८॥

ॐ ह्रीं भाषासमितिसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जे लहै अनजल सोधि सुभ चित एक टक ठाढे भखै।
नहि सैन अंगुरी नैन मुखते बोल हू नाही अखै॥
फिर दोष षटचालीस टालै और दूषन बहु टरै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै॥९॥

ॐ ह्रीं एषणासमितिसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जे धरैं वस्तु संभाल पृथ्वी लेंय भू तैं जोयकै।
परमादतैं लें धरैं नाही महा सुभ चित होयके॥
तिन मांहि नाहि प्रमाद राखै लगे अगिले अघ हरै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै॥१०॥

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मल मूत्र खेपै ठाम लखिकै तिरस थावर पालिया।
निज भाव मीतो करम रीतो औरके अघ टालिया॥
तिस बनै राजै आय जोगी बैर जिय सब परिहरैं।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै॥११॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जे हलो भारी उसन सीतल नरम करकस जानिये।
लूखो रु चिकनो आठ लच्छन फरस इंद्री मानिये॥
या फरस इंद्री जगत जीत्यौ तासकूं जे बसि करै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै॥१२॥

ॐ ह्रीं स्पर्शनेंद्रियजयनिरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मिष्ट खाटो कटु कसायल चिरपरो पांचौं सही।
ये रसन इन्द्री विषय जियको जकडि करि बाँधो मही॥
रसन अक्षिने जगत जीत्यौ तासकूं जे वसि करै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै॥१३॥

ॐ ह्रीं रसनेन्द्रियजयनिरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंध अरु दुरगंध दो विधि गंध इन्द्री जानिये।
इन विषै वसि जिय होय रागी दोष उर महि आनिये ।।
इन जीय जगके सकल जीते तासकुं जे बसि करै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै ।।१४।।

ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रियजयनिरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

पीत स्याम सुपेद सब्ज सु सुरख यह पांचों कहे।
इनके वसि जिय देखि पुद्गल राग दोषी चित लहे ।।
ते विषै इन्द्री चक्षु वसि करि आप निरअंकुस फिरै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै ।।१५।।

ॐ ह्रीं चक्षुरिन्द्रियजयनिरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सचित अचित सु मिश्र तीनौं विषय श्रवन तने कहे।
सुभ सुने रागी असुभ सुनि कै दोष जुत उरमें भहे ।।
जिन विषै श्रोत्तर आप बसि करि बाव बिच समता धरै।
ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुख संचरै ।।१६।।

ॐ ह्रीं करणेन्द्रियजयनिरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(चाल जोगीरासा की)

समता भाव सकल जीवनतैं आप समा सब जानै।
संजम तप सुभ रहै भावना राग दोष नहि आनै ।।
आरत रुद्र न भोग भूमही निरआकुल रस रीझै।
तिन साधन के तिन प्रति जुग पद पूजेतैं अघ सीझै ।।१७।।

ॐ ह्रीं सामायिकावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अरहंत सिद्धकी जो थुति कीजै भक्ति भाव उर आनी।
ताही रस आतम रंग ल्यावै सो सतवन विधि जानी ।।
सो मुनिया भी निसि दिन ठानै मन वच काय लगाई।
तिनके पद वसु द्रव्य थकी हूं पूजों इक चित्त लाई ।।१८।।

ॐ ह्रीं स्तवनाश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

मन वच तन अरहंत सिद्धकूं कर धर सीस नमावै।
सो वंदन विधि मुनि नित ठानै अगिले पाप खिपावै॥
ऐसे साधुनके पद पंकज भक्ति भाव उर आनी।
पूजन करहु दरव आठोंते अरघ तनी विधि ठानी॥१९॥

ॐ ह्रीं वंदनावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोष लगै मन वच तन कोई ताकु खय विधि काजे।
सो ही रीति करै उर आनी अपनी सुधता साजे॥
प्रतिकर्मनतैं भान शुद्ध करि आलोचन मन आनै।
ते हूं साधु नमो सुख काजै ता फल मो अघ भानै॥२०॥

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

त्याग करै पर वस्तु सकत सम प्रत्याख्यान सुजानो।
वो विधि असन रसादिक कोई इन आदिकको मानो॥
नित प्रति या विधि करै सु सबही समता जुत चित ठानै।
ते गुरु हूं पूजों वसु द्रव्य लै शत्रु मित्र येक मानै॥२१॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तहँ थिति धार तहै जग पीहर ऐसो साहस धारै।
जो सर ठाम छुड़ायो चाहत कष्ट बहुत विध पारै॥
तो हू धीर तजै नहिं आसन आतम रस लपटाये।
ते हूं साधु नमो जुत कर सिर मन वच सीस नमाये॥२२॥

ॐ ह्रीं कायोत्सर्गावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(पद्धरी छन्द)

जो ऊँच नीच भू लखै न कोय।
तृणपाहन खंड गिनै न कोय॥
शुद्ध भूमि जीव बिन सैन लाय।
ते साधु जजों उर हरष लाय॥२३॥

ॐ ह्रीं भूमिशयनगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जे करै न तन आभरन सार।
तन गंध लेप त्यागन सुधार॥
इत्यादि काय ससरुष नांहि।
ते मुनिवर बंदों हरष लाहि॥२४॥

ॐ ह्रीं मंजनत्यागमूलगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जे रहै नगन तन मात जात।
तिन पै नहिं तृन तुस वसन पात॥
नभ ओढै भूतन तल बिछाय।
ते नमो साधु वसु द्रव्य लाय॥२५॥

ॐ ह्रीं वस्त्रत्यागगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निज करतैं निज शिर केस लेय।
चित करुना करी उर धीर जेय॥
तन शोभा तजि मन शुद्ध भाय।
ते साधु नमो वसु द्रव्य लाय॥२६॥

ॐ ह्रीं कचलोचगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

येक बार लघु भोजन खाय।
रस बिन तथा सहित रस पाय॥
भरनो उदर ममत कछु नांहि।
ते हूँ साधु जजों उमगाहि॥२७॥

ॐ ह्रीं एकभुक्तिगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

येक ठाम थिति भोजन करै।
तन थिर काज राग बिन भरै॥
मोक्ष पंथ साधन के काज।
ते हूं साधु जजों सिव राज॥२८॥

ॐ ह्रीं स्थितिभुक्तिगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्षम जीव दयाके काज।
दंत धोवन त्यागैं मुनिराज॥
सकल जंतु बंधु सम जान।
ते हूं साधु नमो अर्घ आन॥२९॥

ॐ ह्रीं दंतधोवनरहितगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल जोगीरासेकी)

पंच महाव्रत समिति पांच लखि इन्द्रि सब वसि आनै।
आवसि षट भूसैन मंजन तजि वसन त्याग सुभ ठानै॥
लोचन कच इक बार लघू अन एक ठाम थिति काजै।
दंत न धोवन बीस आठ इह साधु सुभग गुन साजैं॥३०॥

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिमूलगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

साधुजीकी जयमाला

(दोहा)

बीस आठ गुन यह सकल, धरे मोक्षमग जान।
तिनको सुनि व्याख्यान भवि धारत उपजै ज्ञान॥१॥

(चाल-भरथरीकी)

ते गुरु पूजों भावसों, जे करुणा प्रतिपाल।
आप तिरहिं पर तारहीं, मुनि दीनदयाल॥ ते गुरु० ॥

पंच महाव्रत आदरै पाचों समिति समेत।
इन्द्री पांचों वसि करैं षट आवसि हेत॥ ते गुरु० ॥

भूमि शयन मंजन तजन पट त्यागी जान।
कच लोचन लघु अन लहै अस थिति सुभ आन॥ ते गुरु० ॥

दंत धोवन कहुं ना करैं मुनि दीनदयाल।
सब जिय रक्षक हित धनी सहु जग हितपाल॥ ते गुरु० ॥

सत्य महाव्रत जे धरैं भाखैं असति न वैन।
त्याग अदत्तादानको ब्रह्मचार सु चैन॥ ते गुरु० ॥

नगन वपू परिग्रह तजै चालै भूमि निहार।
खाय देखि धर लेय सो जोहूँ ठाम विचार॥ ते गुरु० ॥

मल मूत्रादिक त्याग है सो हू भूमि निहार।
इन्द्री पाँचो वसि करै विरकत चित धार॥ ते गुरु० ॥

समरस इन्द्री वसि करै आठों विषय निवार।
रसनाके पांचों विषै त्यागै ममत प्रहार॥ ते गुरु० ॥

गंध तने दोऊ विषै जरे दुखदा जान।
पांच विषै नेतर तने जीतै सुभ चित आन॥ ते गुरु० ॥

करन विषै तीनों हरै अचित मिश्र सचित।
कठिन भूमि सोवन बनै सब जीव निमित्त॥ ते गुरु० ॥

मंजन विधि नहि तन विषै झलकै नस जाल।
वसन रहित तन सोहनो सुर पूज विसाल॥ ते गुरु० ॥

सिर मुख दाढी कच लुचैं बाधा लहै न कोय।
एक बार भोजन लघू निर दूषन सोय॥ ते गुरु० ॥

तन थिति सिव सुख कारनै आन काज न जान।
दंत न धोवैं दयानिधि निज सम सब मान॥ ते गुरु० ॥

ऐसे बीस अरु आठ गुन धारी मुनि कोय।
तिन के पद वसु द्रव्यतैं पूजूँ मन वच होय॥ ते गुरु० ॥

(सोरठा)

तन विरकत सिव मिंत, जन्तु सकल रक्ष पाल हैं।
निज सुख धारक संत, पूजेतैं बहु सुख बढै ॥१५॥

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(इति साधु महाराजकी पूजा समाप्त)

समुच्चय जयमाला

(कवित्त छन्द)

जनमत दस दस केवल उपजे, चौदह देव करै थुति लाय।
अनंत चतुष्टय प्रातिहार्य वसु सब मिलि गुन छयालीस सुथाय ॥
इनको धरै देव सो मोकों भौ भौ सरन होहु सुखदाय।
सुर नर हरि पूजत अरहंत पद अपनो आतम सुफल कराय ॥
समंत णाण दंसण वीरज गुण सुहमत गुण अवगहन सुजान।
अगुरुलघु सप्तम गुण जानौ अष्टम अव्याबाध बखान ॥
यह गुण आठ धरै बिन मूरति चेतन अंक सदा सुखदान।
ऐसे सिद्ध लोक सिर राजै तिन पद ''टेक'' नमो उर आन ॥
दस लक्षन सुभ धर्म तनें हैं द्वादस भेद कहै तप सार।
षट् आवसि सुभ गुपति तीन लखि पांच भेद जानौ आचार ॥
इह सुभ छत्तीसों गुण धारे आचारज सब जिय हितकार।
तिनके पद मन वचन काय सुध पूजों भवि सब 'टेक' निवार ॥
एकादस अंग ज्ञान धरै उर तिनकी रहस सकल पहिचानै।
चौदह पूरव लही रिद्धि तिन करुना करि उपदेश बखानै ॥
आप पढै शिष्यन पढ़वावै समता भाव राग पद भानै।
ऐसे गुणको धरै उपाध्याय तिन पद 'टेक' भजै सिव जानै ॥
पंच महाव्रत समिति पांच गिन इन्द्री पांच करैं वसि धीर।
षट् आवस्य करैं नित ही मुनि ता करि पाप हरै वर वीर ॥
भूमिसयन आदिक गुण सात जु और मिलावो इनके तीर।
अष्टाविंशति होय सकल मिलि इन धर साधु करै सिव सीर ॥
येही पंच गुरु परमेष्ठी येही सकल हितू सुखकार।
येही मंगल दायक जगमैं येही करै भवोदधि पार ॥

येही पांचों पंचम गति मय ये ही पंच मुक्ति करतार।
इनके पदको भव भव सरनों मागो उर की ''टेक'' निवार॥

(दोहा)

अरहंत सिध आचारके, पाँय उपाध्या पाय।
साधु सहित पांचों चरन, पूजों ''टेक'' लगाय॥

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(इति पंचपरमेष्ठि-पूजन विधान समाप्त)

समुच्चय अर्घ

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हन्त पूजूं, सिद्ध पूजूं चावसों;
आचार्य श्री उवझाय पूजूं, साधु पूजूं भावसों।
अर्हन्त-भाषित वैन पूजूं, द्वादशांग रचे गनी;
पूजूं दिगंबर गुरुचरन, शिव हेत सब आशा हनी।
सर्वज्ञभाषित धर्म दशविधि दयामय पूजूं सदा;
जजि भावना षोडश रतनत्रय जा विना शिव नहिं कदा।
त्रैलोक्यके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं;
पन मेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूं।
कैलास श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूं सदा;
चंपापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।
चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेहके;
नामावली इक सहस वसु जय होय पति शिवगेहके।

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय;
सर्व पूज्य पद पूजहूं, बहु विध भक्ति बढाय।

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु; देव-शास्त्र-गुरु; उत्तमक्षमादि दशधर्म; दर्शनविशुद्धिआदि षोडशभावना; त्रैलोक्यसंबंधि-कृत्रिम-अकृत्रिम समस्त चैत्य-चैत्यालय; पंचमेरु-संबंधि-चैत्य-चैत्यालय; नंदीश्वर-संबंधि-जिन-जिनालय; श्री कैलास-सम्मेदगिरि-गिरनारगिरि-चंपापुरी-पावापुरी आदि निर्वाणक्षेत्र; शुत्रुंजय-गजपंथा आदि सिद्धक्षेत्र, अध्यात्म-साधनातीर्थ सुवर्णपुरी, श्रवणबेलगोला आदि अतिशयक्षेत्र; श्री ऋषभआदि चतुर्विंशति जिनेन्द्रदेव; श्री सीमंधर आदि विंशति जिनेन्द्रदेव; इत्यादि त्रिलोकवर्ती-त्रिकालवर्ती समस्त-पूज्यपदेभ्यो अनर्घ पदप्राप्तये महा अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचपरमेष्ठीकी आरती

इह विधि मंगल आरती कीजै,
पंच परम पद भज सुख लीजै ।।टेक।।

पहली आरती श्री जिनराजा,
भवदधि पार उतार जिहाजा ।। इह विधि०।।

दूसरी आरती सिद्धन केरी,
सुमरन करत मिटै भवफेरी ।। इह विधि०।।

तीजी आरती सुर-मुनीन्दा,
जनम-मरन दुख दूर करिंदा ।। इह विधि० ।।

चौथी आरती श्री उवझाया,
दर्शन देखत पाप पलाया ।। इह विधि० ।।

पांचमि आरती साधु तिहारी,
कुमति-विनाशन शिव-अधिकारी ।। इह विधि० ।।

छट्ठी आरती श्री जिनवानी,
'द्यानत' सुरग-मुकति सुखदानी ।। इह विधि० ।।

शांतिपाठ

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शीलगुणव्रतसंयमधारी;
लखन अेक सौ आठ विराजै, निरखत नयन कमलदल लाजै।

पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी;
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमों शांतिहित शांतिविधायक।

दिव्य विटप पुहुपनकी वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा;
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।

शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगतपूज्य पूजौं शिर नाई;
परम शांति दीजे हम सबको, पढैं तिन्हें पुनि चार संघको।

(वसंततिलका)

पूजें जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके,
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके;
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप,
मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप।

(इन्द्रवजा)

संपूजकोंको प्रतिपालकोंको, यतीनको औ यतिनायकोंको;
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन शांतिको दे।

(स्रग्धरा छंद)

होवै सारी प्रजाको सुख बलयुत हो धर्मधारी नरेशा,
होवै वर्षा समै पै तिलभर न रहै व्याधियोंका अन्देशा;
होवै चोरी न जारी सुसमय वरतै हो न दुष्काल मारी,
सारे ही देश धारैं जिनवर वृषको जो सदा सौख्यकारी।

(दोहा)

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज;
शांति करो सब जगतमें, वृषभादिक जिनराज।

(मन्दाक्रान्ता)

शास्त्रोंका हो पठन सुखदा, लाभ सत्संगतीका,
सद्वृतों का सुजस कहके, दोष ढांकूं सभीका;
बोलूं प्यारे वचन हितके, आपका रूप ध्याऊं,
तौलौं सेऊं चरण जिनके मोक्ष जौलौं न पाऊं।

(आर्या)

तव पद मेरे हियमें, मम हिय तेरे पुनीत चरणोंमें;
तबलौं लीन रहों प्रभु, जबलौं पाया न मुक्ति-पद मैंने।

अक्षर पद मात्रासे, दूषित जो कछु कहा गया मुझसे;
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुडाहु भवदुःखसे।
हे जगबन्धु जिनेश्वर, पाऊं तव चरण शरण बलिहारी;
मरण–समाधि सुदुर्लभ, कर्मोंका क्षय सुबोध सुखकारी।

॥ परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

(अहीं नववार णमोकार मंत्रनो जाप जपवो.)

विसर्जन

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया;
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर ॥१॥

आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनं;
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥२॥

मंत्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥३॥

मंगलं भगवान् वीरो मंगलं गौतमो गणी;
मंगलं कुंदकुंदार्यो जैनधर्मोऽस्तु मंगलम् ॥४॥

सर्वमंगल मांगल्यं, सर्वकल्याणकारकं;
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतु शासनम् ॥५॥